Lecture No - 04

Name of the College - A.P.S.M. College, Barauni, Begusarai
L.N.M.U. Darbhanga

Name - Dr. Bharti Kumari

Deptt - A.I.H. & C

Lession/ Plan - B.A Part III A.I.H. & C (H) paper V

Name of topic - (गोलाकार फलक) शुंगकालीन

Date 28 - 06 - 2021

गोलाकार फलक, शुंगकालीन प्रधान स्तूप -

भरहुत - वेदिका का अनेक गोलाकार फलकों द्वारा अलंकृत करने की योजना है। उन फलको में पुष्प (कमल) पशु, सेल्ठी का सिर या अन्य सामाजिक विषयों का प्रदर्शन है कुल फलको को देखते ही बनता है। उनमें हास्यापद बातें खुदी है। एक में बंदर डाक्टर के रूप में दीख पड़ता है। वह चिमटे से मनुष्य की दाँत बाहर निकालते उत्कीर्ण है। उसमें चिमटे को रस्सी में बाँध कर हाथी के गले में फंसा दिया गया ताकि वह बलपूर्वक उस दाँत को बाहर खींच सके। दूसरे फलक में बंदर हाथी को नचा रहे है हाथी का पैर मोटे रस्से से बंधा है। उसकी पीठ पर अनेक बंदर बैठे है तथा अंकुश से खोद रहे है पार्श्व में बंदरो का झुंड बाजे बजाता जा रहा है। भरहुत के कई प्रधान विषयों को मायादेवी का सपना, जेतवन - बिहार, यवमझकीय जातक आदि दृश्य गोलाकार फलको पर प्रदर्शित है तथा उनके नीचे लेख अंकित है। उज्ज्वल की खुदाई तथा मूर्तियों का तालबद्ध प्रवाह भरहुत की विशेषता प्रकट करता है। इस प्रकार भरहुत के कलाकारों ने वेदिका पि...

Scanned with CamScanner

या तोरण को अलंकृत करने और योजना तैयार की थी, जिसे सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। इनमें अशोककालीन कला सिद्धान्त का अभावात्मक प्रदर्शन है। इसमें मध्य भारत की वन जातियों की संस्कृति (Tribal Culture) का तत्व प्रकट होता है।

पाद इन स्तम्भों में गोलाकार फलक बने हैं जिनमें पुष्प, जानवर की आकृतियाँ या कथानक प्रदर्शित हैं। सब प्रदर्शन के नीचे लेख खुदा है, जिससे उनका एकीकरण हो जाता है। इन स्तंभों पर यक्ष - यक्षिणी की भी आकृतियाँ (रूपचित्र) उत्कीर्ण हैं। साधारणतया यक्ष या देवता तोरण के समीपस्थ स्तम्भ पर चित्रित हैं। संभवतः प्रवेश द्वार की रक्षा निमित्त उन्हें विशिष्ट स्थान दिया गया था। यक्ष-यक्षिणी की मनुष्याकार आकृति प्रमुख स्थान पर स्थित है पर इनको सीमा में बाँधा नहीं गया है। वृक्षका तथा श्रीमा देवता का रूपचित्र गोलाई में तैयार दीख पड़ता है। अतः इन्हें रेखाकार (linear) अवस्था के द्योतक मानते हैं। पश्चिमी तोरण पर प्रदर्शित रूपचित्रों को निश्चित योजना से तैयार किया गया है। इनकी बनावट में दृष्य का अभाव है। भरहुत के मनुष्य आकार के रूपचित्रों को देखने से प्रकट होता है कि कलाकार मानव आकृति का अच्छा (वास्तविक) ज्ञान रखता था।

भारती कुमारी
AI HC SC